ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यज्ञ संबन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए
7428894020 मिस कॉल करें
thearyasamaj

वर्ष 43, अंक 41 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 7 सितम्बर, 2020 से रविवार 13 सितम्बर, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

पितृपक्ष-श्राद्ध पर विशेष आलेख

मृतकों का श्राद्ध नहीं - जीवित माता-पिता की करें सेवा

श्रद्धा शब्द का अर्थ है- (श्रत् धा) अर्थात् सत्य को धारण करना। श्रद्धा को ही आस्था और विश्वास कहा जाता है। इसका एक अर्थ प्रसन्नता भी है, जैसे किसी कर्म के प्रति उत्पन्न श्रद्धा। श्रद्धा के पर्यावाची शब्दों में यकीन, विश्वास, आस्था और निष्ठा भी सम्मिलित हैं। लेकिन आजकल श्रद्धालु लोगों ने श्रद्धा का ऐसा मजाक बनाया है कि श्रद्धा के मायने ही बदल गए हैं। बिना सोचे-समझें श्राद्ध जैसी निरर्थक परंपराओं का निर्वहन श्रद्धा के नाम पर किया जा रहा है। किसी को श्रद्धा का सत्य स्वरूप बताया जाए तो वो यही कहता है नहीं-नही हमारी तो यही श्रद्धा है.....आर्य संदेश के इस लेख में पढें श्रद्धा का सत्य स्वरूप। - सम्पादक

हमारी वैदिक संस्कृति संपूर्ण विश्व में आदर्श, उज्ज्वल और श्रेष्ठ संस्कृति है। वैदिक संस्कृति का सूर्य मानव मात्र को पारिवारिक, सामाजिक एवं वैश्विक दृष्टि से सेवा-साधना के लिए प्रेरित करता है। प्राचीन काल में हमारे यहां माता-पिता, आचार्य से लेकर समाज के वरिष्ठ -विशिष्ठ नागरिकों की सेवा और सम्मान करने की परंपरा रही है। इस सेवा भाव को यज्ञ के समान महत्व दिया जाता था। महाभारत काल के बाद कुछ शताब्दियों में हमारी संस्कृति पर अनेक प्रहार हुए। परिणामस्वरूप मानवीय मूल्यों के अवटूटन के साथ-साथ समाज के अभिन्न अंग माता-पिता और बड़े-बुजुर्गों के सम्मान के प्रति समाज में बड़ा बदलाव आया। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, भीष्म पितामह, श्रवण कुमार और नचिकेता आदि महापुरुषों के देश में जहां माता-पिता की आज्ञाओं को, उनके सेवा और सम्मान को सर्वोपरि माना जाता था। वहीं आज जीवित माता-पिता अपमान और तिरस्कार का जीवन जीने के लिए मजबूर तथा बेबस नजर आते हैं। आए दिन समाचार पत्रों में, टी.वी. चैनलों पर दिल दहलाने वाली खबरें आती हैं कि अमुक स्थान पर स्वार्थवश कोई पुत्र अपने पिता को जान से मार देता है या कोई पुत्री अपनी मां को प्रताड़ित करते हुए नजर आती है। इससे बड़ी विडम्बना यह है कि जीवित माता-पिता को तो हर तरह की पीड़ा और कष्ट झेलने के लिए मजबूर किया जाता है। लेकिन जब वें नहीं रहते, उनके मर जाने के बाद वर्ष में एक बार, एक दिन उनके श्राद्ध के नाम पर ब्राह्मणों को भोजन आदि कराकर यह समझा जाता है कि हमने अपने माता-पिता और पूर्वजों को भोजन कराया है। और यह कर्म भी लोग डर के मारे करते हैं। क्योंकि स्वार्थी ब्राह्मणों ने समाज में यह डर पैदा किया हुआ है कि अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो आपको पितृ दोष लग जाएगा। आपका आहित हो जाएगा, आप पाप के भागीदार होंगे। इन सब निराधार बातों को आधार बनाकर लोग अपने मृतक पितरों के लिए हर वर्ष आश्विन मास में पंद्रह दिनों तक श्राद्ध रूपी अंधविश्वास से भरे आयोजन करते हैं।

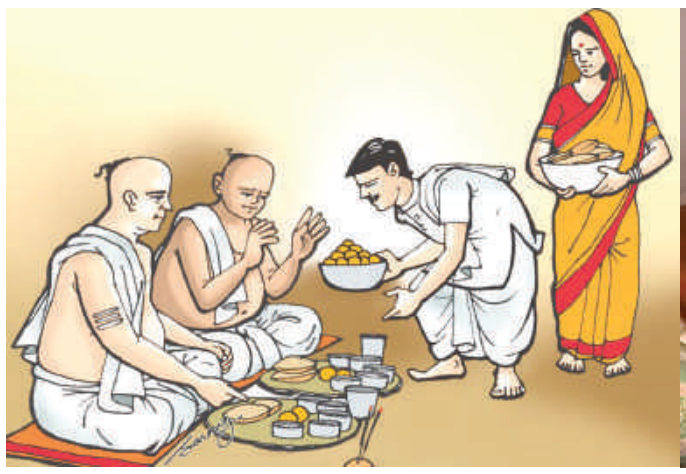

महर्षि दयानंद सरस्वती ने पंच महायज्ञों में एक पितृ यज्ञ करने का विधान हमें बताया है। जिसमें हमें अपने जीवित माता-पिता की सेवा श्रद्धापूर्वक करनी चाहिए। उनके लिए भोजन, वस्त्र, औषधि आदि का प्रबंध करना चाहिए। वह भी वर्ष में एक बार नहीं बल्कि आजीवन करना चाहिए। आर्य समाज पितृ यज्ञ को ही श्राद्ध का वैदिक स्वरूप मानता है। अपने जीवित माता-पिता, दादा-दादी और बड़े-बुजुर्गो की सेवा करके उन्हें सन्तुष्ट करने को ही अपना कर्त्तव्य मानता है। अगर गहराई से विचार किया जाए तो वास्तव में जो जीवित हैं उन्हीं की तो हम सेवा कर सकते हैं, जो नहीं रहे उनकी सेवा कैसे संभव हो सकती है? उन्हें कोई, कैसे भोजन करवा सकता है? जो ब्राह्मण को भोजन कराया जाता है वह तो उसके निजी जीवन को पुष्टि देता है, सन्तुष्ट करता है और जिनके नाम पर श्राद्ध के रूप में उन्हें भोजन कराया जाता है। ब्राह्मण को क्या पता कि वे कहां पर हैं? किस योनि में हैं?क्योंकि ईश्वरीय कर्म सिद्धांत के अनुसार मृत्यु के कुछ समय पश्चात् ही आत्मा नया शरीर धारण कर लेता है। शरीर के रूप में उसे कौन सा, कैसा शरीर मिला तथा उसका आहार क्या होगा? किसी को क्या पता? लेकिन समाज में बिना सोचे-समझे बस एक परंपरा स्थापित हो गई, जिसे लोग बिना विचार ही निभाते चले जा रहे हैं।

एक बूढ़ी माता ने अपने पति का श्राद्ध करने हेतु ब्राह्मण को निमंत्रण दिया। अगले दिन जब ब्राह्मण भोजन करने के लिए आया तो भोजन बनने में थोड़ा विलंब था। उस बीच माता का बेटा पंडित जी से बात करने लगा। उसने पंडित जी से पूछा कि ब्राह्मण महाराज जो हम आपको भोजन कराएंगे क्या वह हमारे पिता के पास पहुंच जाएगा? क्या उस भोजन से उनको सन्तुष्टि मिलेगी? ब्राह्मण ने कहा हां जो आप मुझे भोजन कराएंगे आपके पिता तक पहुंच जाएगा। उस नौजवान ने पुनः प्रश्न किया कि फिर तो आप यह भी जानते होंगे कि मेरे पिता कौन-सी योनि में है, उन्हें कौन-सा शरीर मिला है? ब्राह्मण ने कहा यह तो मैं नहीं जानता। नौजवान ने पूछा जब आप यह नहीं जानते कि उन्हें कौन-सा शरीर मिला है और उनका आहार क्या है तो फिर यह भोजन उनके पास कैसे पहुंचेगा? तभी अंदर से जो माता भोजन बना रही थी वह एक इंक्जेंशन लेकर बाहर निकली और इन्जेकशन में इन्सुलिन

- शेष पृष्ठ 7 पर

अब 24 घंटे चल रहा है आपका अपना चैनल
आर्य संदेश टीवी
Arya Sandesh TV
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल
प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध
REAL 303 · Cruze tv 335 · VooDoo 2038 · dailyhunt · TVZON · Shava tv · MXPLAYER · KaryTV
आर्यसमाज के समाचार एवं अपने सुझाव 7428894010 पर व्हाट्सएप्प करें। प्रतिदिन स्वयं जुड़ें और अन्यों को भी जुड़ने के लिए प्रेरित करें।
आर्यसन्देश टीवी पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की समय सारणी पृष्ठ 8 पर दी गई है

वेद-स्वाध्याय

समर्पण करो

इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा मधौ न मक्ष आसते।
इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवो रथे न पादमा दधुः।।-ऋ. 7/32/2
ऋषिः **वसिष्ठः**।। देवता - **इन्द्रः**।। छन्दः **बृहती**।।

शब्दार्थ - **मधौ न** = जैसे मधु पर **मक्षः** = मधुमक्षिकाएँ **आसते** = बैठती हैं वैसे **इमे** = ये **ते** = तेरे **ब्रह्मकृतः** = ज्ञान-निष्पादन करनेवाले भक्त लोग **हि** = निश्चय से **सुते** = प्रत्येक सुत सोम पर, प्रत्येक ज्ञान-निष्पादन के स्थल पर **सचा** = समवेत होकर, तन्मग्न होकर बैठते हैं और ये **वसूयवः** = वसु व अभीष्ट फल चाहनेवाले **जरितारः** = स्तोता, भक्त लोग **इन्द्रे** = परमेश्वर में **कामम्** = अपनी इच्छा को, कामनामात्र को **आदधुः** = रख देते हैं, समर्पित कर देते हैं, **रथे न** = जैसे रथ में **पादम्** = पैर को रख देते हैं [और बैठ जाते हैं]।

विनय - हे इन्द्र ! सदा तेरे ज्ञान का निष्पादन करनेवाले, तेरे उद्देश्य से ब्रह्मयज्ञ करनेवाले ये भक्त लोग जगह-जगह से तेरे ज्ञान का, तेरे प्रेम का संग्रह करते रहते हैं। जैसे 'मधुकृत्' मक्षिकाएँ जहाँ मधु देखती हैं वहीं जा बैठती हैं और इस प्रकार सब कहीं से मधु इकट्ठा करती हैं, उसी तरह ये 'ब्रह्मकृत्' लोग जहाँ कोई विकसित ज्ञानपुष्प देखते हैं जहाँ कहीं तेरे गुणों की सुगन्धि पाते हैं वहीं जा पहुँचते हैं और उसमें समवेत होकर, तल्लीन होकर तेरे भक्तिरस का आस्वादन और संग्रहण करते हैं। प्रत्येक ब्रह्मचर्चा के स्थान से, प्रत्येक हरि कीर्तन-मण्डली से, प्रत्येक शुभ यज्ञ से, प्रत्येक सद्ग्रन्थ से और प्रत्येक चेतानेवाली घटना से, अर्थात् जहाँ भी कहीं तेरे लिए 'सोम अभिषुत किया' जाता है, उन सभी स्थलों से वे तल्लीन होकरचुपके से मधु को, सोमरस को, ज्ञानामृत को ग्रहण करते जाते हैं। इस प्रकार ये लोग ज्ञानधनी, भक्तशिरोमणि बनकर सब संसार के लिए भक्तिपूर्ण ज्ञान प्रदान करते हैं, संसारी प्यासों को ज्ञानामृत पिलाते हैं।

इन भक्तों में ऐसा सामर्थ्य इसलिए आ जाता है चूँकि ये सांसारिक कामनाओं से पीड़ित नहीं होते। ये निष्काम होते हैं। ये अपनी सब कामनाएँ इन्द्र प्रभु में समर्पित कर चुके होते हैं। जैसे रथ में पैर रखकर, रथ में बैठकर हमें अभीष्ट स्थान पर पहुँचने के लिए स्वयं अपने प्रयत्न से नहीं चलना पड़ता, रथ हमें स्वयं पहुँचा देता है, उसी प्रकार ये तेरे स्तोता भक्त लोग अपनी कामना-मात्र को तुझ परमेश्वर में रखकर निश्चिन्त हो जाते हैं कि तुम सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञानी प्रभु स्वयमेव उनकी सब शुभ कामनाओं को ठीक तरह पूर्ण करोगे, स्वयमेव अभीष्ट फल प्राप्त कराओगे।

ओह! इस इन्द्र-रथ का आश्रय पाकर, अपने कामनारूपी पैरों को समेटकर इस रथ पर बैठ जाने पर, कोई तृष्णा-व्याकुलता नहीं रहती, कोई चिन्ता-जलन नहीं रहती, कोई झंझट व परेशानी नहीं रहती।

-: साभार :-वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

बी.बी.सी. के भारत विरोधी समाचारों की समीक्षा

भारत में किसका एजेंडा चला रहा है बी.बी.सी. ?

ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन यह ब्रिटेन का सरकारी मीडिया संस्थान है, ठीक वैसे ही जैसे भारत में प्रसार भारती है। बीबीसी ब्रिटिश नागरिकों के टैक्स के पैसे से चलता है और पूरी दुनिया में अपनी खबरें परोसता है। एक समय बीबीसी की खबर को सबसे निष्पक्ष समझा जाता था लेकिन लगता है जैसे आजकल बीबीसी अपनी राह भटक चुका है। यानि जो बीबीसी कभी सटीक निष्पक्ष खबर के लिए जाना जाता रहा है अब उस बीबीसी का विवादित चौनलों में नाम गिना जाने लगा है।

पिछले दिनों भारतीय मूल के ब्रिटिश पत्रकार लॉर्ड इन्द्रजीत सिंह जी ने 5 अक्टूबर 2019 को बीबीसी के साथ अपना 35 साल पुराना रिश्ता तोड़ दिया था। असल में लॉर्ड इन्द्रजीत सिंह बीबीसी रेडियो फॉर के लोकप्रिय कार्यक्रम थॉट फॉर द डे को प्रेजेंट करते थे। हर रोज की तरह उस दिन भी भारतीय मूल के ब्रिटिश पत्रकार लॉर्ड इन्द्रजीत सिंह तैयार होकर अपना प्रोग्राम प्रेजेंट करने आये थे। उस दिन का मुद्दा था गुरु तेगबहादुर जी। कैसे तेगबहादुर जी ने 17वीं शताब्दी में भारत में हिंदुओं को जबरन मुस्लिम बनाये जाने के खिलाफ मुगलों से लड़ाई लड़ी थी और कैसे गुरू तेग बहादुर जी के धैर्य और संयम से आग बबूला हुए औरंगजेब ने चांदनी चौक पर उनका शीश काटने का हुक्म जारी किया था।

प्रोग्राम शुरू ही होने वाला था कि अचानक बीबीसी की मोनिटरिंग टीम ने लॉर्ड इन्द्रजीत सिंह को प्रोग्राम करने से रोक दिया। क्योंकि बीबीसी को मुस्लिम नाराज नहीं करने थे, इसके बाद इन्द्रजीत सिंह ने बीबीसी छोड़ दिया और मीडिया से कहा बीबीसी का उद्देश्य अब पूरी तरह से बदल गया है। मुझे विश्वास है कि यदि सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक जी और यहां तक कि ईसा मसीह जीवित होते तो उन्हें भी थॉट्स फॉर द डे में शामिल नहीं किया जाता। यानि मीडिया की स्वतन्त्रता की बात करने वाला बीबीसी अपने पत्रकारों को बोलने की कितनी स्वतंत्रता देता है। इससे साफ पता चलता है कि बीबीसी का कोई भी कंटेंट बिना उसकी मोनिटरिंग टीम के प्रस्तुत नहीं किया जाता।

इसके अलावा बीबीसी ऐसा कोई मौका नहीं छोड़ता जिससे वो भारत की एकता और संप्रभुता को चुनौती न दे सके। धारा 370 हटे एक साल हो गया है, लेकिन बीबीसी अब भी जम्मू कश्मीर को भारत प्रशासित क्षेत्र लिखता है। कई लोगों ने जब इस ओर उसके संपादकों का ध्यान खींचा तो उन्होंने जवाब देने के बजाय भारत विरोधी इस रवैये को और भी तेज कर दिया। जम्मू कश्मीर ही नहीं, अरुणाचल और उत्तर पूर्व के कुछ क्षेत्रों को लेकर भी बीबीसी अक्सर ऐसी आपत्तिजनक रिपोर्टिंग करता रहा है।

इससे आगे बढें तो ब्रिटेन दुनिया के उन कुछ देशों में है जहां चाइनीज वायरस से सबसे ज्यादा तबाही हुई। लेकिन बीबीसी का पूरा ध्यान भारत की खिल्ली उड़ाने पर था। बीबीसी हिंदी ने एक कार्टून छापा जिसमें मास्क लगाना जरूरी करने के केंद्र सरकार के आदेश पर व्यंग्य किया गया। इसमें दिखाया गया कि इससे भारतीयों को अपने तन के वस्त्र फाड़कर मास्क बनाने पड़ेंगे। यह कोई व्यंग्य नहीं बल्कि नस्लभेदी मानसिकता की निशानी थी। भारत ने जब मानवीय आधार पर मलेरिया की दवा हाइड्रोक्लोरोक्वीन के निर्यात की अनुमति दी, तब सबसे पहले बीबीसी हिंदी ने एक रिपोर्ट पोस्ट की और दावा किया कि इससे भारत के अंदर दवा की कमी हो जाएगी और लोगों को नहीं मिलेगी। ये सरासर झूठ था क्योंकि भारत ने निर्यात की अनुमति अपनी आवश्यकता पूरी होने के बाद ही दी थी। जब बीबीसी की यहाँ भी दाल नहीं गली तो कुछ लोगों का सहारा लेकर हाइड्रोक्लोरोक्वीन के साइड इफेक्ट बताने शुरू कर दिए। इसमें खाली बैठी कई विदेशी दवा कम्पनियों के कुछ लोगों का सहारा लिया गया ताकि चीन की दवा मार्किट में पहुँच जाये।

.....बीबीसी का पूरा ध्यान भारत की खिल्ली उड़ाने पर था। बीबीसी हिंदी ने एक कार्टून छापा जिसमें मास्क लगाना जरूरी करने के केंद्र सरकार के आदेश पर व्यंग्य किया गया। इसमें दिखाया गया कि इससे भारतीयों को अपने तन के वस्त्र फाड़कर मास्क बनाने पड़ेंगे। यह कोई व्यंग्य नहीं बल्कि नस्लभेदी मानसिकता की निशानी थी। भारत ने जब मानवीय आधार पर मलेरिया की दवा हाइड्रोक्लोरोक्वीन के निर्यात की अनुमति दी, तब सबसे पहले बीबीसी हिंदी ने एक रिपोर्ट पोस्ट की और दावा किया कि इससे भारत के अंदर दवा की कमी हो जाएगी और लोगों को नहीं मिलेगी। ये सरासर झूठ था क्योंकि भारत ने निर्यात की अनुमति अपनी आवश्यकता पूरी होने के बाद ही दी थी। .....

लेकिन संयोग से एक दिन बाद ही खुद ब्रिटिश सरकार भारत के आगे हाइड्रोक्लोरोक्वीन के लिए हाथ पसारकर खड़ी हो गई। उसने केवल हाइड्रोक्लोरोक्वीन ही नहीं, पैरासिटामॉल जैसी आम दवा भी माँगी। जो देश खुद इतनी विपन्न स्थिति में है उसका सरकारी मीडिया अगर भारत को लेकर ऐसी मानसिकता रखता है तो समझ जाइये बीबीसी चीन के हाथ की कठपुतली बनकर नाच रहा है? आप देखिये बीबीसी की भारतीय सेवाओं में आप कभी भी चीन के विरोध या आलोचना में कोई समाचार नहीं पाएंगे। यहां तक कि हाँगकाँग में चीन के अत्याचारों के समाचार भी बीबीसी पर सेंसर किए गए।

फरवरी के अंतिम सप्ताह में राजधानी दिल्ली में हुए साम्प्रदायिक दंगों में पुलिस के जवान सहित 53 लोगों की मौत हो गई थी जबकि सैंकड़ों लोग घायल हो गए थे। लेकिन बीबीसी का रवैया बहुसंख्यक विरोधी ही दिखा। बीबीसी ने अपनी रिपोर्ट में उस दंगाई भीड़ का जिक्र नहीं किया जिसने दिल्ली पुलिस के हेड कॉंस्टेबल रतनलाल और आईबी कर्मचारी अंकित शर्मा की निर्मम हत्या कर दी थी। डीसीपी पर हमले का भी कोई जिक्र नहीं किया गया है। इसी कारण 12 मार्च को एक असाधारण घटनाक्रम के तहत प्रसार भारती के 100 से ज्यादा कर्मचारियों ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर प्रसार भारती के पूर्व सीईओ जवाहर सरकार और साथ में अंतरराष्ट्रीय मीडिया संस्था बीबीसी की कड़ी निंदा करनी पड़ी।

- शेष पृष्ठ 7 पर

आत्मा और मोक्ष

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित स्वाध्याय मित्र योजना के अन्तर्गत श्री सुधीर कुमार बंसल जी , ज्वाइंट सैक्रेटरी, आर्यसमाज सैन्ट्रल, सै. 15, फरीदाबाद द्वारा 'आत्मा और मोक्ष' विषय पर आधारित लेख बहुत ही प्रेरणाप्रद और सारगर्भित है। आत्मा की सिथति, शरीर परिवर्तन और मोक्ष की व्यवस्था पर सरल भाषा में वेदादि शास्त्रों के प्रमाणों के साथ यह स्पष्ट रूप ये बताया गया है कि आत्मा कैसे पुनर्जन्म धारण करते-करते मोक्ष प्राप्त करता है।

हम आर्यसन्देश के सभी प्रबुद्ध पाठकों, आर्यसमाजों के सम्मानित अधिकारियों से निवेदन करते हैं कि आप भी सभा द्वारा स्वाध्याय मित्र योजना के अन्तर्गत वेदादि शास्त्रों के स्वाध्याय के अनुसार अपना लेख हमें भेज सकते हैं। जिसे हम आर्य सन्देश के आगामी अंकों में प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे। - सम्पादक

सामान्यतया कुछ प्रश्न जब-तब उभरते हैं और चर्चा का विषय बनते हैं -

1. आत्मा क्या है, 2. परमात्मा क्या है, 3. इसका महत्व क्या है, 4. क्या यह आवश्यक है कि आत्मा को अपने निवास के रूप में किसी शरीर की आवश्यकता है? यदि हाँ, तो क्या प्रयोजन है? 5. क्या आत्मा कोई पुनर्जन्म लेता है या वह किसी मुक्ति के साथ जाता है? 6. आत्मा का उद्देश्य या मानव जीवन का लक्ष्य क्या है?

पुनर्जन्म क्या है?

यह आत्मा का दूसरे शरीर में पुन: प्रवेश या पुनर्जन्म है। आत्मा अनादि और अमर है। जिस क्षण आत्मा शरीर को छोड़कर अलग होती है, उसी समय शरीर चेतना विहीन हो जाता है। जिसे साधारण शब्दों में मनुष्य का मरना कहा जाता है। दूसरे शब्दों में शरीर मर जाता है या पार्थिव हो जाता है। आत्मा मौजूद है, व्यक्ति जीवित है। आत्मा को दूसरे शरीर में फिर से प्रवेश करने की प्रक्रिया को पुनर्जन्म कहा जाता है। यह आत्मा के विकास की निरंतर प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक कि आत्मा पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेती और सर्वज्ञ ईश्वर का आनन्द न प्राप्त कर लेती हो? इस सिद्धि या अवस्था को मोक्ष का नाम दिया गया है और ऐसी आत्मा पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त हो लेती है, ऐसा माना गया है। यह सब धर्म, कर्म या आत्मा के कर्म पर निर्भर करता है।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि, संयाति नवानि देहि।।

- गीता 2/22

जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को छोड़कर दूसरे नए शरीरों को प्राप्त होता है। और आत्मा का स्वरूप कर्म चक्रों से बाधित होता है। आत्मा को पुल्लिंग की संज्ञा दी गई है!

न जायते प्रियते कदाचिन्नायम् भूत्वा
भविता वा न भूय:।
अजोनित्य: शाश्वतोऽयं पुराणो न
हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

- गीता 2/20

आत्मा न तो कभी पैदा होता है और न ही कभी मरता है, न ही अस्तित्व के बाद यह कभी समाप्त होता है। आत्मा जन्म के बिना है, अनन्त, अमर है और व्यग्र भी है, शरीर के नष्ट होने पर यह नष्ट नहीं होता है!

मोक्ष के साधन

पमेश्वर की आज्ञा पालने, अधर्म, अविद्या, कुसंग, कुसंस्कार, बुरे व्यसनों से अलग रहने और सत्य- भाषण, पक्षपात रहित न्याय, परोपकार, विद्या और धर्म की वृद्धि करने, ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना अर्थात योगाभ्यास करने, विद्या पढ़ने, पढ़ाने और धर्मपूर्वक पुरुषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने, सबसे उत्तम साधनों को करने और जो कुछ करे, वह सब पक्षपातरहित धर्मानुसार ही हो, इत्यादि साधनों से मुक्ति और इनसे विपरीत ईश्वराज्ञा भंग करने आदि काम से बन्ध होता है। (स.प्र. समुल्लास 9)

मोक्ष से पुनरावृत्ति

एक सुदीर्घ-काल तक मुक्ति का आनंद भोगने के बाद मुक्तात्मा पुन: संसार में जन्म-मरण के चक्र में आता है।

जातस्य ध्रुवो मृत्यु र्ध्रुवम् जन्म
मृतस्य च। तस्मादपरिहायेर्थे न त्वम्
शोचितुमर्हसि।।

- गीता 2/ 27

जिसने जन्म लिया है, उसकी मृत्यु निश्चित है। और मृत्यु को प्राप्त कर फिर जन्म लेगा। पुनर्जन्म के सिद्धान्तानुसार ये अटल सत्य है। ये चक्र ध्रुव है, ऐसा जानिए। अत: अपने अपरिहार्य कर्तव्य पालन में तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए।

जीव द्वारा मुक्ति के साधन रूपी कर्म कितने भी श्रेष्ठ क्यों न हों, वे सीमित होते हैं। सीमित कर्मो का फल सीमित ही होगा, अनन्त नहीं हो सकता। अन्यथा ईश्वर का न्याय नष्ट हो जाये! छत्तीस हजार बार सृष्टि प्रलय के चक्र के समान मुक्ति का समय शास्त्रों अनुसार बताया गया है। मुक्ति से पुनरावृत्ति यदि नहीं होती तो अब तक संसार का उच्छेद हो चुका होता! सृष्टि-प्रलय का चक्र अनादि काल से चला आ रहा है। यदि लाखों-करोड़ों वर्षों के बाद भी एक आत्मा की मुक्ति मानें, तो भी अब तक सब जीव आत्माओं की मुक्ति हो जानी चाहिए थी और संसार उच्छिन्न हो जाना चाहिए था। पर ऐसा है नहीं, संसार निरन्तर अपनी गति से चल रहा है। इसमें अब भी अरबों-खरबों मनुष्य एवं प्राणी, जीवात्माएं आदि जन्म ले रहे हैं। अत: यही सिद्धांत युक्ति-युक्त भी है कि मुक्ति से पुनरावृत्ति होती है और ये वेद-शास्त्रों के अनुसार प्रामाणिक है।

ओ३म् वायुरनिलम् मृतमवेदं
भस्मान्तम् शरीरम्।
ओ३म् क्रतो स्मर। क्लिबे स्मर, कृतं
स्मर।।

- यजुर्वेद 40/15

मनुष्यों को चाहिए कि जैसी मृत्यु की वृत्ति होती है और शरीर में से आत्मा का पृथक होना होता है, वैसे ही इस क्षण को भी जानें! इस जड़ शरीर को आत्मा रूपी पुंज के देह से निकल जाने के पश्चात ही पुन: पार्थिव की संज्ञा दी गई है और अंतिम संस्कार के रूप में ऐसे शरीर को जला दिया जाता है, पश्चात् इस शरीर के लिए कोई संस्कार शेष नहीं रहता जबकि आत्मा की शान्ति के लिए अवश्य प्रार्थना की जाती है ताकि उसे कर्मानुसार उत्तम योनि प्राप्त हो!!

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति
पावक:। न च क्लेदयन्त्यापो न
शोषयति मारुत:।।

- गीता 2/23

इस आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, आग जला नहीं सकती, जल गला नहीं सकता और वायु सुखा नहीं सकती, अर्थात मनुष्य का जीवन तो नश्वर ही है, लेकिन जिस आत्मा ने इस जड़ शरीर में प्रवेश कर इसे जन्म के साथ चौतन्य बनाया है, उस आत्म-पुञ्ज के निकल जाने पर शरीर को पार्थिव (अर्थात पत्थर) की संज्ञा इसीलिए दी गई है, इससे भान होना चाहिए कि सारी रचना तो इस आत्मा रूपी दिव्य शक्ति का ही है। (आत्मा पुल्लिंग वर्गीकृत है।)

मुक्ति का सच्चा स्वरूप क्या है?

मुक्त आत्माएं कहाँ रहती हैं? मुक्ति से जीव लौटता है या नहीं, मुक्ति कि अवधि कितनी है? जीव व ब्रह्म एक है या भिन्न हैं? भिन्न हैं तो फिर ब्रह्म का स्वरूप क्या है? मुक्ति के उपाय क्या हैं? आदि प्रश्नों के तर्क संगत एवं विज्ञान- सम्मत समाधान, सब वेदों में उपलब्ध हैं। मुक्ति विषय में यहाँ दिग्दर्शन मात्र किया गया है। विशेष एवं विस्तृत जानकारी हेतु महर्षि दयानदकृत सत्यार्थ-प्रकाश का नवां समुल्लास पढ़िए और जानकारी लीजिये। यहाँ आलेख की सीमा भी है।

माध्यम की आवश्यकता क्यों?

चैतन्य होने और तत् सम्बन्धित विशेषताओं के कारण, आत्मा को छ: प्रकार के अनुभवों का सामना करना पड़ता है, अर्थात सुविधाएँ, असुविधाएं, लगाव, अलगाव, महत्वाकांक्षाएं और उपलब्धि। यह दुनिया में समय-समय पर सुखद और साथ ही अप्रिय अनुभवों वाली आत्माओं की कड़ी है। आत्मा सुखद लोगों से आराम प्राप्त करता है और अप्रिय लोगों से असुविधाएं प्राप्त करता है। यह स्वाभाविक रूप से असुविधाओं से अलगाव और और इसके विपरीत जुड़ाव के लिए सुविधाएँ विकसित करता है। आराम और जुड़ाव इसे महत्वाकांक्षी बनाते हैं और अलगाव प्रवृत्ति इसे चयन के लिए अग्रसर करती है और इसे मनोवाँछित फल प्राप्त करने के लिए अपनी बुद्धि का उपयोग करने के लिए प्रेरित करती है। 'उपलब्धियों के उद्देश्य से सार्थक प्रभावी प्रयास करने के लिए, आत्मा को एक ऐसे माध्यम की आवश्यकता होती है, जिसके बिना आत्मा का बाहर की किसी चीज से संपर्क नहीं हो पाये क्योंकि आत्मा एक विशेष स्थान पर एक निश्चित समय पर वहां बंधित रहती है।' यह माध्यम मानव-शरीर के रूप में भगवान (परमात्मा) द्वारा आत्मा को प्रदान किया गया है, जिसमें कारण शरीर (जिसे कारण कहा जाता है), ठीक शरीर (सूक्ष्म) और मोटे शरीर (स्थूल) को बाद में एक-के-साथ-साथ ढँक दिया गया है । इनमें से कारण-शरीर गैर-भौतिक है जो भौतिक तत्वों से नहीं बना है।

आत्मा के छ: प्राकृतिक गुण संकाय को बनाते हैं जैसा कि ऊपर दिए गए पैराग्राफ में कहा गया है और सर्वज्ञ ईश्वर से आत्मा की इसलिए विशिष्ट भिन्नता है।

- शेष अगले अंक में

आर्यसमाज के सेवा संस्थान - अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत कार्यरत सेवा ईकाई

'सहयोग' द्वारा दिल्ली सभा के निर्देशन में यज्ञ-वस्त्र वितरण एवं नशे के विरुद्ध जागरूकता कार्यक्रम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई 'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' का सेवा प्रकल्प ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है। पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सहयोग एक ऐसी कल्याणकारी दिव्य योजना है, जिससे लाखों लोग लगातार लाभ प्राप्त कर रहे हैं। प्रान्तीय स्तर पर दिल्ली में सहयोग का कार्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत किया जा रहा है।

दिनांक 06 अगस्त, 2020 (रविवार) को इंद्रा कैम्प, विकास पुरी नई दिल्ली में यज्ञ-वस्त्र वितरण व नशे के खिलाफ जागरूकता कार्यक्रम आयोजित हुआ।

'नशा' हमारे राष्ट्र की उन्नति में सबसे बड़ा गतिरोधक है, जिसने हमारी वर्तमान की पीढ़ी को इतना बलहीन बना दिया है कि वो दीवारों का सहारा लेकर अपने घरों के दरवाजे तक पहुँचता है और यही नशा है जो आने वाली नस्लों को इस तरह खोखला कर देगा कि अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए वो खड्ग तक धारण नही कर सकेंगी। इसीलिए आर्य समाज देश के इस शत्रु से लड़ने के लिए देशवासियों को तैयार कर रहा है। आज हमने यज्ञ के माध्यम से लोगों को नशे के खिलाफ बिगुल बजाने का आह्वान किया और लोगों ने भी आर्य समाज की इस पहल के साथ जुड़कर समाज को नशामुक्त बनाने का संकल्प लिया। यज्ञ के पश्चात् सभी ने बहुत ही धैर्य से कपड़े लिए और प्रसाद लेकर अपने घर गए। सभी क्षेत्रवासियों की इच्छा है कि यह कार्यक्रम दोबारा हो। हम जल्दी ही यहाँ पुन: कार्यक्रम करेंगे।

आपका योगदान - 'सहयोग' के माध्यम से आप इस सेवा का हिस्सा बन सकते हैं। आपके घर में बहुत-सा ऐसा सामान होता है जो आपके काम नहीं आता है किन्तु किसी अन्य के लिए वह बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। आप वह सामान हमें दें, हम उसे हर जरूरतमंद तक पहुँचाएंगे।

आप हमें 'वस्त्र, पुस्तकें, खिलौने, जूतें, चप्पल, आदि' सामान दे सकते हैं। आप सामान एकत्र करके सहयोग टीम को 9540050322 पर कॉल करें। हमारी गाड़ी आपके घर से सामान लेकर आएगी। आप अपना सहयोग हमारे कार्यालय आकर भी दें सकते हैं। कार्यालय पता है-

आर्य समाज मन्दिर,
डी.सी.एम. रेलवे कोलोनी,
निकट फिल्मिस्तान,
दिल्ली-110007

स्वास्थ्य रक्षा

एलोपैथी चिकित्सा लाभ तथा हानि

एलोपैथी चिकित्सा इस समय सारे संसार में फैली हुई है। उसके अनुसंधान भी सभी क्षेत्रों में लगातार तेजी से हो रहे हैं, परंतु जिन परिणामों की इस विज्ञान जगत को आशा थी, वे नहीं मिल पा रहे हैं। कोरोना महामारी के प्रकोप को 8 महीने से भी ज्यादा समय हो गया है, करोड़ों लोग इसकी चपेट में हैं, सारे संसार में भय और तनाव का वातावरण बना हुआ है, लाखों लोग मृत्यु का ग्रास बन चुके हैं, किंतु ऐलोपैथी में अभी इसका कोई उपचार संभव नहीं हो पाया है। हजारों वैज्ञानिक चिकित्सक लगातार शोध कर रहे हैं, खूब परिश्रम और पुरुषार्थ करके भी सफलता अभी कोसो दूर दिखाई दे रही है। ऐसे में आयुर्वेदिक औषधियां पहले दिन से ही उपयोगी सिद्ध हो रही हैं, हमारे ऋषि-मुनियों का तप उनकी साधना का लाभ समाज को मिल रहा है। लेकिन फिर भी हम ऐलोपैथी की उपयोगिता को नकार नहीं सकते-यहां प्रस्तुत है-ऐलोपैथी चिकित्सा के लाभ और हानि पर आधारित लेख।- सम्पादक

एलोपैथी से लाभ- एलोपैथी चिकित्सा से कुछ लाभ होने निर्विवाद हैं, जैसे यह मनुष्य को तुरंत राहत दिला देती है। मनुष्य यह चाहता है कि मुझे कष्टों से शीघ्र-से-शीघ्र राहत मिल सके। एलोपैथी चिकित्सा उसमें सफल रही है। इसमें दूसरा निर्विवाद लाभ सफल शल्यचिकित्सा है। एलोपैथी ने शल्य चिकित्सा में वास्तव में आशातीत सफलता प्राप्त की है। पहले तो परम्परागत औजारों द्वारा शल्यचिकित्सा की जाती थी, परंतु विज्ञान के बढ़ते कदमों ने औजारों का स्थान विज्ञान की नई तकनीकों को दे दिया है। इसमें लेजर का प्रयोग उल्लेखनीय है। अणु तकनीक ने भी इस चिकित्सा पद्धति में बहुत सहायता की है। अब तो विज्ञान निरन्तर इस ओर प्रयत्नशील है कि जहां तक हो, शल्य चिकित्सा में चीर-फाड़ कम से कम करनी पड़े।

एलोपैथी चिकित्सा विज्ञान के स्थापित सिद्धान्तों पर आधारित है। इसमें नित्य नया प्रयोग होता रहता है, जो इस चिकित्सा पद्धति को प्रगति की ओर ही ले जा रहा है, परंतु इन सबके होते हुए भी इसको अपेक्षित सफलता नहीं मिल पा रही है। इस पद्धति में इंजेक्शन एक ऐसी ही प्रक्रिया है, जिसके परिणाम शीघ्र ही सामने आ जाते हैं और इसके द्वारा मनुष्य को तत्काल राहत मिलती है। इस प्रक्रिया से कई कठिन रोगों पर अंकुश लगाने में सहायता मिली है। वैज्ञानिक पद्धति पर चलते हुए इस चिकित्सा पद्धति में विभिन्न परीक्षणों को डॉक्टर यह मानकर चलता है कि रोगी को कोई रोग नहीं है, परंतु वास्तविकता यह नहीं होती। परीक्षणों में कहीं न कहीं कुछ कमियां रह ही जाती हैं, जिनके लिए वे और परीक्षण करना चाहते हैं। नए-नए यन्त्र निकाले जा रहे हैं, नई-नई तकनीक विकसित की जा रही हैं, जिससे परीक्षण पूर्ण हो सकें, परंतु यह कितना सफल हुआ है, यह तो भविष्य ही बता पाएगा। एलोपैथी चिकित्सा की हानियां- एलोपैथी लाभ तो जो हैं, वे प्रत्यक्ष ही हैं, पर इस पद्धति में जो सबसे बड़ा दोष है, वह है दवाइयों का प्रतिकूल प्रभाव (साइड-इफेक्ट)। एक तो दवाइयां रोग को दबा देती हैं, इससे रोग निर्मूल नहीं हो पाता, साथ ही वह किसी अन्य रोग को जन्म भी देती हैं। यह इस पैथी के मौलिक सिद्धान्त की ही न्यूनता है।

दूसरी बात है **अधिकतर रोग डॉक्टरों के अनुसार असाध्य भी हैं। जैसे हृदय रोग, कैंसर, एड्स, दमा, मधुमेह और अब कोरोना आदि।** यहां तक कि साधारण से लगने वाले रोग जुकाम का भी एलोपैथी में कोई उपचार नहीं। पेट से सम्बन्धित जितने भी रोग हैं, वे तो अधिक डाक्टरों के समझ में कम ही आते हैं। उदर रोगों के परीक्षण भी कठिन होते हैं तथा उसके सकारात्मक परिणाम भी नहीं मिल पाते। उदर रोगों का जितना सटीक एवं सफल उपचारा आयुर्वेद में है, उतना और किसी दूसरी चिकित्सा पद्धति में नहीं आता। अधिकतर रोग उदर से प्रारम्भ होते हैं, अत: यदि वहां पर अंकुश लगाया जा सके तो कई रोगों का निदान स्वत: हो सकता है। मनुष्य अधिकतर स्वस्थ और नीरोग रह सकता है। डॉक्टरों के पास एक ही अस्त्र है कि वे एन्टीबाईटिक दवाई देते हैं, जो लाभ कम और हानि अधिक करती हैं। इन दवाइयों का उदर पर सीधा दुष्प्रभाव पड़ता है और व्यक्ति की पाचनक्रिया उलट-पुलट हो जाती है।

यदि रोगी उस दवाई को शीघ्र ही बंद न कर दे तो दूसरी व्याधियां उग्र रूप ले लेती हैं। इस चिकित्सा-पद्धति में औषधि से अधिक शल्य चिकित्सा सफल हो पाई है। यहां तक कि जिन कई रोगों का आयुर्वेद अथवा यूनानी या होम्योपैथिक चिकित्सा में औषधियों से उपचार हो जाता है यहां भी एलोपैथी शल्यचिकित्सा का सहारा लेती है।

दूसरे शब्दों में यह पद्धति शल्य चिकित्सा पर अधिक आधारित होती जा रही है। इससे चिकित्सा अन्य चिकित्सा-पद्धतियों से महंगी भी होती जा रही है और साधारण व्यक्ति की पहुंच से बाहर होती जा रही है। एलोपैथी में यह भी देखने में आया है कि कई ऐसे रोग हैं, जिनका कोई कारण डॉक्टरों की समझ में नहीं आता। वे उसका नाम एलर्जी दे देते हैं, इस नाम का उनके पासकोई उपचार नहीं है। डॉक्टर लोग इस एलर्जी के उपचार के विषय में सतत् प्रयत्नीशील हैं, परंतु अभी तक उन्हें विशेष सफलता नहीं मिल पाई है। इस कथित रोग के विशेषज्ञ भी हो गए हैं, परंतु परिणाम कोई विशेष्ज्ञ नहीं मिल पाया है।

यह कहा जा सकता है कि एलोपैथी चिकित्साा से लाभ सीमित है, परंतु इससे हानियां अधिक हैं। इसलिए आज संसार के जिन देशों में केवल इसी चिकित्सा पद्धति का अनुसरण हो रहा है, वे भी दूसरी चिकित्सा पद्धतियों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। यूरोप के कुछ देश होम्योपैथिक अथवा प्राकृतिक चिकित्सा की ओर आकर्षित हो रहे हैं। जबकि अमेरिका के लोग अब आयुर्वेद की ओर विशेष आकर्षित हो रहे हैं। वहां इस विषय में अनुसंधान भी तेजी से किए जा रहे हैं, इसके उदाहरण हैं कि कुछ आयुर्वेदिक औषधियां अमेरिका से भारत आ रही हैं और वे सफलतापूर्वक प्रयोग में लाई जा रही हैं।

यह तथ्य तो सही है कि एलोपैथिक चिकित्सा वैज्ञानिक कसौटी पर खरी है। इसलिए इसका प्रचार-प्रसार भी अधिक हो सका, परंतु मेरे विचार से यह चिकित्सा पद्धति अपने आप में पूर्ण नहीं है। आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति अपने आपमें पूर्ण है, परंतु इसका अधिक प्रचार नहीं हो पाया। हमारी मानसिकता में विदेशी पद्धति श्रेष्ठ-इसका प्रचार-प्रसार भी मुख्य हेतु है। आयुर्वेदिक चिकित्सा में विश्वास बढ़ाना हम सबका कर्त्तव्य होना चाहिए, क्योंकि यह श्रेष्ठ, सफल एवं पूर्ण चिकित्सा-पद्धति है।

38वें बलिदान दिवस (9 सितम्बर) पर विशेष

लाला जगत नारायण जी के शाकाहारी बनने की कहानी, उन्हीं की जुबानी

लाला जगत नारायण जी को हमसे बिछुड़े हुए आज 38 वर्ष हो गए हैं। परंतु पंजाब केसरी समूह पर उनका वरदहस्त आज भी बना हुआ है। लाला जगत नारायण जी ने जहां अपने संपादकीय लेखों में देश की समस्याओं पर निर्भीक एवं सटीक विचार नि:संकोच व्यक्त किए, वहीं अपनी विचारधारा से जुड़े मुद्दों पर आजीवन अडिग रहे। लाला जी के जीवन के इसी पहलू को उजागर करता दिनांक 7 नवम्बर, 1973 के अंक में प्रकाशित उनका संपादकीय प्रस्तुत है। उनके बलिदान दिवस 9 सितम्बर पर लाला जी को आर्य समाज की ओर से शत-शत नमन।

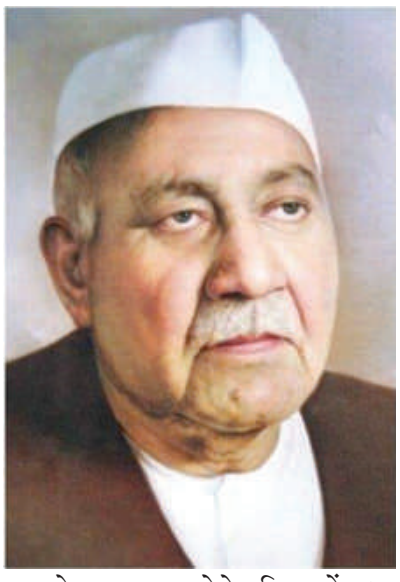

मेरा जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ जो आर्य समाजी था। मेरे पिता जी भी आर्य समाजी थे और माता जी तथा उनका परिवार भी आर्य समाजी था। हांलांकि मैं यहां स्पष्ट कर दूं कि मेरे पिताजी के जीवन में कुछ विशेष परिवर्तन काफी लम्बे समय बाद घटित हुए। आर्यसमाज की विचारधारा के अनुरूप उनमें कई विशेषताएं थीं, जैसे सत्य बोलना, आर्यसमाजों के कार्यक्रमों में सम्मिलित होना, दूसरों के सेवा-सहायता के लिए हमेशा आगे रहना, किन्तु कई बार गलत संगति के कारण मदिरापान एवं अशुद्ध भोजन भी कर लेते थे। पिता जी कभी-कभी मदिरापान भी किया करते थे और माता जी हमेशा उनको शराब पीने से मना किया करती थीं और कई बार घर में मदिरापान और मांस खाने पर परस्पर झगड़ा भी हो जाया करता था।

जब पिता जी शराब पीकर घर आते थे तो मैं माता जी को बता दिया करता था कि आज पिता जी शराब पी कर आए हैं तो माता जी पिता जी को कहा करती थीं कि आप शराब न पीने का वायदा करके आज फिर क्यों शराब पीकर आए हैं तो पिता जी कहा करते थे कि मैंने शराब नहीं पी।

इस पर माता जी मुझे कहती थीं कि पिता जी का मुंह सूंघकर बताओ कि इन्होंने शराब पी हुई है या नहीं। तो मैं मुंह सूंघकर बता दिया करता था कि आज पिताजी शराब पीकर आए हैं और इस पर काफी झगड़ा हुआ करता था और मुझे भी थप्पड़ रसीद किए जाते थे।

यह बात 1905-1907 की है जब मैं 5-7 वर्ष का बालक था। मैं माता-पिता की इकलौती संतान था। अन्य बहन-भाई नहीं थे माता जी यद्यपि मांस खाने के बहुत विरुद्ध थीं, पर मुझे पिता जी के साथ मांस खाने से बहुत कम रोकती थीं क्योंकि वह घर में अधिक क्लेश पैदा करना नहीं चाहती थीं।

1907 में लायलपुर आर्य समाज मंदिर में एक माता गंगा देवी उपदेशिका के रूप में पधारीं और उन्होंने 3-4 दिन मदिरापान तथा मांसाहार के विरुद्ध बड़े प्रभावशाली व्याख्यान दिए। उस उपदेशिका देवी ने मांसाहारी पुरुषों को संबोधित करते हुए कहा था कि क्या मासूम जानवरों का वध करके और उन्हें खाकर अपने पेट को कब्रिस्तान बना रहे हो!

मेरे पिता जी को उसी एक वाक्य ने इतना झकझोरा कि उन्होंने आर्य समाज के मंच पर यह घोषणा की कि मैं आज से न शराब पिऊंगा और न ही मांस खाऊंगा। श्रीमती गंगा देवी जी ने एक वाक्य यह भी कहा था कि मांस खाने वाले पशु-पक्षियों के जो बच्चे पैदा होते हैं वे पैदा होने के बाद पहले मां का दूध ही पीते हैं। शेरनी का बच्चा भी पैदा होने के बाद पहले मां का दूध ही पीता है और उसे मांस नहीं खिलाया जाता। पिता जी ने उस दिन के पश्चात् जब तक वह जीवित रहे न तो मांस खाया और न ही मदिरापान किया।

और तभी से मैंने भी मांस नहीं खाया और न ही अपने विवाहित जीवन के उपरान्त अपने पुत्रों चिरंजीव रमेश चंद्र तथा चिरंजीव विजय कुमार और न ही उनके परिवार तथा बच्चे मांस एवं शराब का सेवन करते हैं और न ही कभी हमारे परिवार को मांस खाने की प्रेरणा मिली है व न ही कभी मांस खाने की इच्छा किसी ने व्यक्त की है।

जो लोग यह प्रचार करते हैं कि मांसाहारी लोग बड़े योग्य और मजबूत होते हैं उन्हें यह स्मरण रखना चाहिए कि हाथी और गैंड़ा दो ऐसे शक्तिशाली पशु हैं जो शेर के बाद पशुओं में बहुत शक्तिशाली माने जाते हैं परंतु ये दोनों शाकाहारी हैं। आज से सौ वर्ष पहले तक भारत में जितने भी युद्ध हुए उनमें हाथी को एक विशेष स्थान प्राप्त होता था और जिस सेना के पास हाथी नहीं होते थे उसकी पराजय निश्चित समझी जाती थी।

इसके अतिरिक्त पुरातन समय में सहकारी सेना के भी चार भाग थे-पैदल, घुड़सवार, रथवाहिनी और हाथियों वाले सैनिक। रथों में घोड़े भी जोते जाते थे और बैल भी। इस प्रकार युद्ध में जो पशु काम आते थे वे तीनों ही शक्तिशाली व तीव्रगामी पशु बैल, घोड़ा, हाथी थे जो पूर्ण शाकाहारी हैं।

इतना ही नहीं बिजली का वेग बताने के लिए आज भी हार्स पावर अर्थात घोड़े की शक्ति शब्द का प्रयोग किया जाता है। किसी मांसाहारी पशु की शक्ति का शब्द नहीं। बहरहाल मैं अधिक तर्क पेश न करते हुए अपने परिवार तथा स्वयं को सुखी समझता हूं कि हमारा पूर्ण परिवार शाकाहारी है और हमें शाकाहारी होने पर गर्व है और बतौर माता गंगा देवी जी-हम अपने पेट में मासूम पशुओं के कब्रिस्तान नहीं बनने देते।

शाकाहारी जीवन एक पवित्र जीवन है और धार्मिक जीवन व्यतीत करने के लिए मनुष्य का शाकाहारी होना अत्यंत आवश्यक है। संसार के सभी धर्म मनुष्य को शाकाहारी होने का उपदेश देते हैं इसलिए हमें अपनी धर्मपुस्तकों के अनुसार शाकाहारी बनना अत्यावश्यक है।

मेरा सारा जीवन राजनीति में गुजरा है। राजनीतिक व्यक्ति का जीवन बड़ा ही पापपूर्ण होता है। अगर किसी मनुष्य ने अत्यंत धार्मिक जीवन व्यतीत कर अपनी आत्मा को शांति के मार्ग पर चलाने की कोशिश करनी हो तो उसको तब तक मन की शांति प्राप्त नहीं हो सकती जब तक वह मांस, मदिरा और तामसी भोजन का परित्याग नहीं करता।

अत: यह जरूरी है कि हम मांस, मदिरा व तामसी भोजन का त्याग करें, सादा जीवन बिताएं व संतों, महात्माओं, ऋषियों के मार्ग पर चलने का प्रयत्न करें। इसी में ही मनुष्य मात्र का कल्याण है।

- लाला जगत नारायण

बाल बोध

रंगों का जीवन पर प्रभाव

आर्य संदेश में "बाल बोध" एक नियमित स्तंभ के रूप शुरू किया गया है। जिसमें बच्चों के द्वारा और बच्चों के लिए ही प्रेरक लेखों के रूप में विशेष उपयोगी जानकारी प्रदान की जाएंगी। इस कालम आर्य परिवारों के बच्चे अपनी कविताएं और सारगर्भित छोटे-छोटे लेख भी भेज सकते हैं, जिन्हें उपयोगिता अनुसार प्रकाशित किया जाएगा, इसके पीछे हमारा उद्देश्य है कि बाल प्रतिभाओं का विकास हो, बच्चों के मन में लेखन के प्रति रूचि जागृत हो, उनका चहुंमुखी विकास हो। अत: आर्य परिवारों के सभी प्रतिभावान बच्चों को सादर आमंत्रित किया जाता है। आप अपने लेख-कविता और प्रेरक प्रसंग आदि 'सम्पादक' के नाम डाक से अथवा हमारे ईमेल पते - aryaasandeshdelhi@gmail.com पर भेजें-अपना नाम, पता, फोन नं. साथ लिखें। - सम्पादक

बच्चों, आज हम रंगों के बारे में बात करते हैं। हम महसूस करें या न करें किंतु हमारा जीवन रंगों से भरपूर रहता है। हम रंगों को देखते हैं, रंगों को खाते हैं, पीते हैं, पहनते हैं और पूरा रंगमय जीवन जीते हैं। वेद में सूर्य को सात रश्मि वाला कहा गया है, ये सात रश्मि सूर्य की सात किरणें हैं, बरसात के दिनों में आपने देखा होगा कि आसमान में इंद्र धनुष के सात रंग दिखाई देते हैं, जिसे अंग्रेजी में "रैम्बो" कहते हैं। वैसे तीन रंग मुख्य माने गए हैं काला-नीला और लाल, किंतु हम तो बहुत सारे रंग प्रकृति में देखते हैं, इन तीनों रंगों से ही सारे रंग बनते हैं। इन रंगों का हमारे मन पर अच्छा और बुरा दोनों तरह का प्रभाव पड़ता है।

कुछ समय पूर्व मैक्सिको विश्व विद्यालय में खिलाड़ियों पर रंगों से पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया। वहां खिलाड़ियों के वस्त्र तथा फुटबाल के विभिन्न रंगों को लेकर परीक्षण किया गया। जिसमें लाल रंग प्राय: करके हराने वाला एवं पीले रंग को विजय दिलाने वाला पाया गया। अमेरिका (शिकागो) में खिलाड़ियों के विश्राम कक्ष (चाय) पान, अल्पाहार भोजन आदि के लिए अलग-अलग रंगों के कक्षों में करवाकर यह पाया गया कि नारंगी (उषा) के रंग से रंगा हुआ कक्ष उनको अत्यधिक स्फूर्ति एवं उत्तेजना प्रदान करता है। एक जलपान गृह नीले रंग से पुता हुआ था। वहां पर आने वाले ग्राहकों ने प्राय: अधिक ठंड की शिकायत दर्ज कर दी।

इसी प्रकार का एक अध्ययन कार्य करने वाले व्यापारी वर्ग पर किया गया। उन्हें विभिन्न रंगों के घरों में बैठाकर उनसे घड़ियां ले ली गई और परस्पर वार्तालाप करने को कहा गया। लाल रंग के कक्ष में बैठे हुए लोग बिना किसी निष्कर्ष के बाहर आए तथा उन्हें दो घण्टे में ही चार घण्टों जैसी शिथिलता अनुभव होने लगी। नीले रंग के कक्ष में बैठने वाले हंसते और मुस्कान फैलाते हुए बाहर आए और उन्हें तो आधे समय का ही आभास हुआ एवं उनमें घनिष्ठता बढ़ी। पीले रंग के कक्ष वाले व्यक्तियों को समय का ठीक ज्ञान रहा। उन्होंने परस्पर कई मुख्य निर्णय भी लिए एवं सारे के सारे खुश दिखाई दिए।

लॉस एंजिल्स में डॉ. हॉर्स ने कुछ विद्यार्थियों की शारीरिक क्षमता और बौद्धिक तीक्ष्णता पर रंगों के प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होंने समान स्थिति वाले छात्रों के तीन वर्ग बनाए और उन पर पीले, लाल तथा नीले रंगों के प्रभाव के परीक्षण का परिणाम देखा। उन्होंने पाया कि चिन्तनशील, तनावग्रस्त रहने वालों को नीले रंग से शान्ति मिली थी। मन्दबुद्धि व आलसी छात्रों को उत्तेजना एवं प्रेरणा देने में लाल रंग सफल रहा। मध्यम वर्ग के छात्रों ने अपनी प्रसन्नता और दक्षता पीले रंग में प्रकट की थी।

भोजन पर भी रंगों का विशेष प्रभाव पड़ता है। एक बार के परीक्षण में एक स्थान पर कुछ रंगीन संपादीप (बल्ब) इस प्रकार लगा दिए गए कि खाद्य पदार्थों का रंग कुछ-का-कुछ ही दिखाई देने लगा। परिणामस्वरूप उसमें आने वाले अभ्यागतों की क्षुधा (भूख) ही मर-सी गई। और उन्होंने बहुत कम भोजन किया। दूसरी बार रंगीन प्रकाश ऐसा किया गया कि खाद्य वस्तु अत्यधिक स्वच्छ और उसके पात्र अधिक आकर्षक एवं देदीप्यमान दिखाई देने लगे। इस बार अभ्यागतों ने आशा से कुछ अधिक ही भोजन किया।

वस्त्रों पर भी रंगों का प्रभाव पड़ता है। सामान्य रंग से रंगे वस्त्र ही अधिक उपयुक्त होते हैं क्योंकि गहरे रंग में रंगे वस्त्रों की प्रतिक्रिया भी गहरी होती है। गहरे रंगीन व काले वस्त्र अधिक गर्म माने जाते हैं क्योंकि वे ताप को अधिक पोषित करने की शक्ति रखते हैं।

- शेष पृष्ठ 7 पर

अनावश्यक विचारों को कैसे नियन्त्रित करें?

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

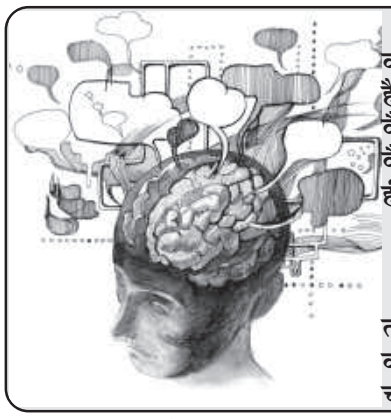

.....मनुष्य उसे कहते हैं जो सोच विचार कर कर्म करे। व्यक्ति जैसा मन में विचार करता है, वैसा वाणी से बोलता है। जैसा बोलता है, वैसे ही कर्म करता है और जैसे कर्म करता है वैसा ही बन जाता है। सभी कार्य विचार करके ही करने चाहिएं। कहा भी है-

बिना विचारे जो करे सो पीछे पछताय।
बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से खाय।।

परन्तु जब ये विचार सीमा से बढ़ जायें तब परेशानी का कारण बन जाते हैं। आयुर्वेद के अनुसार वात प्रकृति वाले अस्थिर और चंचल स्वभाव वाले होते हैं।

मनुष्य उसे कहते हैं जो सोच विचार कर कर्म करे। व्यक्ति जैसा मन में विचार करता है, वैसा वाणी से बोलता है। जैसा बोलता है वैसे ही कर्म करता है और जैसे कर्म करता है, वैसा ही बन जाता है। सभी कार्य विचार करके ही करने चाहिएं। कहा भी है-

बिना विचारे जो करे सो पीछे पछताय।
बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से खाय।।

परन्तु जब ये विचार सीमा से बढ़ जायें तब परेशानी का कारण बन जाते हैं। आयुर्वेद के अनुसार वात प्रकृति वाले अस्थिर और चंचल स्वभाव वाले होते हैं। मन की चंचलता के निम्न कारण हो सकते हैं-

अतृप्त इच्छायें

हमारे अवचेतन मन में जन्म-जन्मान्तर के संस्कार संग्रहीत हैं। जिन इच्छाओं की हम पूर्ति नहीं कर पाते वे अवचेतन मन में जड़ जमाकर बैठ जाती हैं और व्यक्ति को व्यथित करती रहती है।

अत्यधिक भावुकता

जो व्यक्ति अन्तर्मुखी (Introvert) होते हैं वे भी मन ही मन अपनी अलग खिचड़ी पकती रहते हैं। अपनी बात को किसी को बताते भी नहीं। यह भयावह स्थिति है जो कभी विस्फोट बम कर प्रकट होती है।

उत्कट इच्छा

किसी कार्य को पूरा करने की उत्कट इच्छा या आग्रह व्यक्ति कुछ कार्यों के प्रति इतना आग्रही हो जाता है कि हर समय उसी के विषय में सोचता रहता है। जब तक वह कार्य पूरा नहीं हो जाता तब तक उसे चैन नहीं मिलता। कार्य के प्रति सावधान रहना तो अच्छा है परन्तु जब यह मोह या दुराग्रह में बदल जाता है तो सबको परेशान करता है।

असुरक्षा की भावना

द्वितीयाद् वै भयं भवति। भय दूसरे से होता है। सब से भयंकर मृत्यु का भय है। इसके अतिरिक्त धन हानि, व्यवसाय या नौकरी के छूटने का भय, रोग या वृद्धावस्था, जन्म कष्ट, पुत्रों का अनुकूल न रहना आदि अनेक कारण हैं, जिनका चिन्तन करने से व्यक्ति अधीर हो जाता है।

भविष्य का चिन्तन

प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि उसका भविष्य सुरक्षित रहे। उसे वृद्धावस्था में किसी प्रकार का कष्ट न हो। आर्थिक परिस्थितियाँ अनुकूल रहें और वृद्धावस्था में कोई देखरेख करने वाला रहे। पुत्र को पुत्र इसलिये कहते हैं कि वह माता-पिता की वृद्धावस्था रूप नरक से रक्षा करता है। उनकी लाठी बनता है। परन्तु जब पुत्र अपेक्षा के अनुरूप खरा नहीं उतरता या आज्ञा नहीं मानता तब माता-पिता की चिन्ता बढ़ जाती है।

अधिक या अनावश्यक सोचना एक आदत है जिसमें अधिकांश भाग नकारात्मक होता है जैसे -

1. अश्लील विचार-युवावस्था के प्रारम्भ में विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण, इण्टरनेट, टी.वी., मोबाईल के अश्लील दृश्य देख कर उनका चिन्तन करना या उन्हें क्रियात्मक रूप में करने का प्रयत्न करना।

2. निराशा के विचार-हर समय भूतकाल में आये कष्ट, असफलता, बाधाओं का चिन्तन कर किसी भी अच्छे कार्य करने का उत्साह न रहना।

3. असफलता के विचार- सफलता और असफलता जीवन में आते ही रहते हैं। कुछ व्यक्ति आत्म विश्वास की कमी के कारण सदा असफलता का ही चिन्तन करते रहते हैं कि इस कार्य में सफलता न मिली तो क्या होगा आदि।

4. अनहोनी के विचार- इसे बहम या काल्पनिक भय कहते हैं जिसका वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नहीं होता।

5. दिवास्वप्न देखना- कुछ लोग शेख चिल्ली के समान बड़े-बड़े हवाई किले बनाते रहते हैं। इनके अतिरिक्त और भी अनेक कारण हैं जहाँ अनावश्यक सोच-विचार ऊर्जा और उत्साह को क्षीण कर देता है।

- शेष अगले अंक में

Makers of the Arya Samaj : Mahatma Hansraj

Continue From Last issue

It was this which brought him into trouble one day. The Headmaster of the Mission School was a kindhearted person. But one day he made some unpleasant remarks about the ancient Aryans. He said, "The ancient Aryans used to worship idols. They were no better than barbarians. They were ignorant because they used to worship sticks and stones.".

As soon as Hans Raj heard these remarks he was upset. Though his other class-fellows remained silent, he got up to protest against these remarks. He said to the Headmaster, "You are not right in what you say. The ancient Aryans were very wise. They used to worship only one God. I believe they were in some respects more civilized than we are today."

The Headmaster asked him where he had learned these things. Hans Raj referred to a book named *Qasas-i-Hind* (the Story of India) which was written in Urdu. In it were written the foHowing words, "The Ancient Aryans were a wise, intelligent and good people. They were highly civilized and were always guided by noble principles. They worshipped only one God, who pervades the whole world. They did not worship anything else but Him. Their religion was based on very lofty principles. They believed that action, worship and knowledge are the three chief parts of religion." But this did not convince the Headmaster. He still kept to his own point of view. To prove it he referred to a book which was used in the school. It said that the ancient Aryans were barbarians.

The Headmaster asked him where he had learned these things. Hans Raj referred to a book named Qasas-i-Hind (the Story of India) which was written in Urdu. In it were written the foHowing words, "The Ancient Aryans were a wise, intelligent and good people. They were highly civilized and were always guided by noble principles. They worshipped only one God, who pervades the whole world. They did not worship anything else but Him. Their religion was based on very lofty principles. They believed that action, worship and knowledge are the three chief parts of religion." But this did not convince the Headmaster. He still kept to his own point of view. To prove it he referred to a book which was used in the school. It said that the ancient Aryans were barbarians.

But Hans Raj believed that he was in the right and repeated the words again. This annoyed the Headmaster very much and he ordered him to leave the school. So he did not attend the school for two days. On the third day he was asked to come back. After this nothing happened until, at the age of sixteen, he passed the Entrance examination. This was in 1880.

This affair with the Headmaster had its lesson for the sensitive soul of Hans Raj. He made up his mind to give people a correct picture of the ancient Aryan civilization. He also resolved to spread the message of the Vedas. Fortun-ately these two ideas of his were in harmony with the spirit of the Arya Samaj, which had been established in the Punjab only a few years. He was naturally drawn towards it and began to attend its weekly meetings. There he learnt a great deal about the greatness of the ancient Indians from lectures and sermons.

But he learnt much more from L. Sain Das. An old Sanskrit poet says, "Good company removes stupidity and dullness. It makes us truthful in speech. It adds to our reputation. It washes away our sins. It keeps us always happy and satisfied. It spreads our fame in all parts of the world. There is hardly anything that good company does not do for men." This proved true in the case ofHans Raj. His contact with L. Sain Das did him much good at that time, for this man was the leader of the Arya Samaj. He was respected by everybody for his noble character and simplicity of life.

Even in those days when every educated person liked to go about in western clothes, L. Sain Das kept to his Indian dress. Besides this, he was known for the purity and nobility of his character. He was above all a person who exercised a great influence on the young. Hans Raj came under his influence and learnt many good things from him. To this dayhe mentions his name with respect and gratitude.

After passing the Entrance examination Hans Raj entered the Government College, Lahore. This period of his life was fruitful in two ways. In the first place, he made friends with many fine young men. Only the names of two of these need be mentioned here. One was Pt. Guru Dutt and the other was L. Lajpat Rai. These three young men might be called" the Three Musketeers" oftheArya Samaj. They did a great deal for it.

Guru Dutt was a great scholar. He was one of the best brains of his time.

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

प्रथम पृष्ठ का शेष

मृतकों का श्राद्ध नहीं, पितृयज्ञ ....

भरते हुए बोली की पंडित जी मेरे पति शुगर के मरीज थे। इसलिए वे भोजन करने से पहले इन्सुलिन का इंजेक्शन लगवाते थे। कृपा करके आप भी पहले इन्सुलिन लें, फिर भोजन ग्रहण करें। इतना सुनते ही ब्राह्मण घबराकर उठ खड़ा हुआ और कहने लगा कि ऐसे थोड़े ही होता है, ऐसा तो हमने आज तक नहीं देखा। नौजवान कहने लगा जब भोजन आप पहुंचा सकते हो तो इन्सुलिन क्यों नहीं पहुंचा सकते हो? चाहे ये बात कहने के लिए ही क्यों न हो लेकिन है तो विचारणीय।

संसार में प्रत्येक व्यक्ति एक यात्री है। इस यात्रा में न जाने हमारे अब से पहले कितने जन्म हुए हैं और आगे न जाने कितने जन्म होंगे? जहां पर हम पहले जन्मे थे वहां पर भी कोई हमारा श्राद्ध मनाता होगा। लेकिन कभी किसी के पास कोई लंच बाक्स आया है क्या? और फिर अगर कोई वर्ष में एक दिन भोजन किसी को करा भी दे और यह समझें कि हमने अपने माता-पिता या पूर्वजों को भोजन कराया है तो इसका मतलब 365 दिन में एक दिन भोजन करा दिया बाकि 364 दिन क्या वें भूखे रहेंगे? वास्तव में जीवित माता-पिता और वृद्धजनों की सेवा करना, उन्हें अपनी सेवा से सन्तुष्ट रखना ही सच्चा श्राद्ध है।

आधुनिक परिवेश में सबसे ज्यादा अगर उपेक्षा किसी की हो रही है तो वे माता-पिता और वृद्धजन हैं। आज का युवा माता-पिता और घर के बड़े-बुजुर्गो का सम्मान करना भूलता ही जा रहा है। और यह भी नहीं समझ पा रहा है कि वर्तमान में जो मैं कर रहा हूं, कल वहीं मेरे सामने घटित होने वाला है। जैसे बीज मैं बो रहा हूं वैसे ही तो फल मुझे प्राप्त होंगे। लेकिन इससे बड़ी विडम्बना की बात यह है कि घरों में माता-पिता और वृद्धजन अपमान और तिरस्कार का जीवन जीते हुए भी अपनी व्यथा को किसी से कह नहीं सकते, अगर कोई उन्हें यह कहता भी है कि आपके बच्चे आपको परेशान करते हैं, आपकी सेवा नहीं करते, यह तो गलत बात है। तब माता-पिता कहते हैं कि ऐसी बात नहीं है। यह तो कलयुग है, यह तो समय का फेर है, आजकल सभी बच्चे ऐसे ही हैं, हमारे बच्चे तो बहुत अच्छे हैं, अगर थोडा बहुत कुछ कहते सुनते भी हैं तो कोई बात नहीं, हैं तो अपने ही, इस तरह से वह अपने मन को समझा लेते हैं। क्योंकि दूसरों के सामने अपनी बेइज्जती कराने में क्या फायदा? अपने बच्चों की बुराई करके अपने ही पगड़ी को उछालना जैसा है। लेकिन यहां पर यह भी विचार करना चाहिए कि जैसे उन्होंने अपने माता-पिता के साथ किया होगा, वैसा ही फल उन्हें प्राप्त होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवित माता-पिता की सेवा करनी चाहिए, उनकी सही आज्ञाओं का पालन करना चाहिए और उनका उचित सम्मान करना चाहिए।

– *आचार्य अनिल शास्त्री*

पृष्ठ 5 का शेष

रंगों का जीवन पर प्रभाव

धूप की थोड़ी सी गर्मी से ये वस्त्र शीघ्र ही गर्म हो जाते हैं और देर तक उसी को अपने अन्दर बनाए रखते हैं। इसलिए शीतप्रधान यूरोप तथा अमेरिका, आदि देशों में गहरे रंग के वस्त्र कुछ ज्यादा ही उपयोगी होते हैं, गर्मी के दिनों में या उष्ण प्रधान भारत जैसे देशों में इनका उपयोग हानिकारक ही होता है। रोग के निवारण में भी रंगों का महत्व कुछ कम नहीं होता। विशेषज्ञों ने रोगियों पर अनेकों बार रंगों के प्रभाव का परीक्षण किया।

रूस में 1886 में पावलीव नाम एक व्यक्ति ने रंगों की शक्तियों का अन्वेषण किया। उसने विभिन्न रंगों वाली बोतलों में पानी भरकर सूर्य के प्रकाश में एक साथ रखा और उसने परीक्षण करने पर पाया कि अब इन के जल सामान्य जल नहीं रह गए हैं। किन्तु इन बोतलों में रंगों की शक्ति आ जाने से वे औषध बन चुके हैं। इनके परीक्षण से कुछ रंगों द्वारा विभिन्न रंगों को दूर करने में सहायता मिलती है।

प्राकृतिक चिकित्सा में सूर्यस्नान का मुख्य स्थान है। इसके निवारण में सूर्यस्नान अपना सहस्पर्धी नहीं रखता। रंगों में ऊर्जा का सूर्य ही एकमात्र स्रोत है। उसी स्रोत सें विभिन्न जल प्रपात, नदियां एवं निर्झर बह रहे हैं। यदि विभिन्न रंगों के शीशों द्वारा हम सूर्य की उन-उन रंगों की रशिमयों को संग्रहीत कर सकें तो उन रंगों से हम पूर्ण लाभ उठाकर अनेक प्रकार के रोगों से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

इससे पता चलता है कि हमारे जीवन में रंग केवल मनोरंजन के ही नहीं, किन्तु हमारे जीवन को गतिमान् एवं स्वस्थ बनाने का साधन भी हैं। यह ठीक है कि ये हमारे मनोरंजन के उपयोग में भी आते हैं किन्तु मनोरंजन मात्र ही इनकी लोकप्रियता का कारण नहीं है, इनका व्यापक लोकोपकारक गुण ही इन्हें विश्व में प्रिय मात्र बनाए हुए है।

यदि रंगों का अस्तित्व व्यावहारिक जीवन से समाप्त कर दिया जाए तो यह जीवन ही समाप्त हो जाएगा और विश्व एक सूने श्मशान से अधिक कुछ और प्रतीत नहीं होगा।

पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज वेद मन्दिर, सी.पी. ब्लाक मौर्य एन्कलेव, पीतमपुरा, दिल्ली-34 को एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है, जो आर्यसमाज के सिद्धान्तों में पूर्ण श्रद्धा रखता हो तथा यज्ञादि समस्त संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न कराने की योग्यता रखता हो। आर्यसमाज में नि:शुल्क आवास के साथ योग्यतानुसार वेतन प्रदान किया जाएगा। इच्छुक महानुभाव अपना विस्तृत बायोडाटा प्रकाशन तिथि से 15 दिनें के अन्दर 'प्रधान जी' के नाम भेजें।

– **सोहनलाल आर्य, मन्त्री (9810716655)**

पृष्ठ 2 का शेष

5 अगस्त 2019 को जब कश्मीर से धारा 370 हटाई गयी तो बीबीसी ने देश में एक अलग माहौल खड़ा किया। यहाँ की फुटेज पाकिस्तान तक पहुंचाई, साथ ही एक खबर प्रसारित करी कि 9 अगस्त को हजारों लोग श्रीनगर के सौरा में विरोध प्रदर्शन के लिए सड़कों पर जमा हुए और पुलिस को प्रदर्शनकारियों की भीड़ को तितर-बितर करने के लिए पैलेट गन का इस्तेमाल करते और आंसू गैस के गोले दागते हुए देखा गया। फिर भी भारत सरकार कह रही है कि विरोध प्रदर्शन नहीं हुआ है। बीबीसी की देखा देखी रायटर्स और अरबी न्यूज अल जजीरा ने इस खबर को विश्वस्तरीय बना दिया।

इस खबरों के तुंरत बाद, गृह मंत्रालय ने एक बयान जारी करते हुए बताया कि विरोध प्रदर्शन में 10,000 लोगों के शामिल होने के समाचार संगठन द्वारा किया गया दावा मनगढंत और गलत है और केवल कुछ विरोधी लोगों ने इस प्रदर्शन में हिस्सा लिया था, जिसमें '20 से अधिक लोग' शामिल नहीं हुए थे।

यहाँ लताड़ मिलते ही उसी दौरान घाटी में भीड़ द्वारा एक ट्रक ड्राइवर की हत्या कर दी जिसे इस संस्थान ने कुछ इस तरह पेश किया कि पत्थरबाजों को लगा कि ट्रक में सेना के जवान हैं इस कारण हत्या कर दी। मसलन ट्रक ड्राइवर की हत्या को एक किस्म से जायज ठहराने का काम किया। जब अरनब गोस्वामी, रिपब्लिक टीवी ने इस मुद्दे को उठाया, और जम्मू पुलिस के एक बड़े अधिकारी इम्तियाज हुसैन ने बीबीसी को लताड़ लगाते हुए ट्वीट किया तब इन्होंने अपनी खबर में परिवर्तन किया।

2017 में जब आतंकियों से मुठभेड़ में भारतीय सैनिक शहीद हुए थे तो उन्हें श्रद्धांजलि देने के बाद तत्कालीन सेना प्रमुख जनरल विपिन रावत ने कहा था की जो लोग आतंक का समर्थन करते हुए आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट और पाकिस्तान के झंडे फहराना जारी रखेंगे तो उन्हें देशद्रोही समझा जाएगा। तब बीबीसी ने हेडलाइन दी थी 'प्रिय सेनापति, आप बस खून बहा सकते हैं।'

मसलन हर मुददे पर पर बीबीसी का स्पष्ट भारत विरोधी एजेंडा सामने आ जाता है बीबीसी के खिलाफ काफी समय से सोशल मीडिया पर मुहीम चल रही है इसे बेन करने की मांग हो रही है कुछ लोग इसकी पुराने रिपोर्टिंग पर सवाल खड़े कर रहे हैं, कुछ कश्मीर से संबंधित रिपोर्टिंग पर सवाल खड़े कर रहे हैं। सिर्फ यही बीबीसी का यह एजेंडा पुराना है एक समय पूर्वी जर्मनी के लोगों ने अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों को उठाने के लिए बीबीसी को हजारों पत्र लिखे, लेकिन खबर तो दूर बीबीसी ने उन पत्रों का जवाब भी देना मुनासिब नहीं समझा। जिसे पिछले दिनों लेखक सुजाने शेडलिश ने इन पत्रों का जर्मन से अंग्रेजी में अनुवाद किया और 2017 में 'लेटर्स विदाउट सिग्नेचर' के नाम से एक किताब प्रकाशित की और लिखा कि जो काम उस जमाने में बीबीसी रेडियो कर रहा था, वही काम आज सोशल मीडिया से करा रहा है।

– *सम्पादक*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रतिभा आपकी - सहयोग हमारा
महाशय धर्मपाल
आर्य प्रतिभा विकास संस्थान
यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा
(IAS/IPS/IFS आदि)
की तैयारी कर रहे योग्य और मेधावी प्रतिभागियों की सहायता की घोषणा करता है।
संस्थान द्वारा चयनित अभ्यर्थियों को दिल्ली में छात्रावास, कोचिंग, प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन सहित सभी सुविधायें प्रदान की जायेंगी।
इच्छुक उम्मीदवार ऑनलाइन आवेदन करने के लिए संपर्क करें।
वेबसाइट : www.pratibhavikas.org
आवेदन की अंतिम तिथि - 16 अक्टूबर 2020
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :
©9311721172 E-Mail : dss.pratibha@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 7 सितम्बर, 2020 से रविवार 13 सितम्बर, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 10-11 सितम्बर, 2020

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 9 सितम्बर, 2020

आर्य संदेश टीवी चैनल
www.AryaSandeshTV.com

1 से 30 सितम्बर तक प्रसारित होने वाले कार्यक्रम

प्रात: 5:00 जागरण मन्त्र
प्रात: 5:05 शरण प्रभु की आओ रे
प्रात: 6:00 क्रियात्मक ध्यान
प्रात: 6:30 संध्या
प्रात: 6:45 आओ ध्यान करें
प्रात: 7:00 दैनिक अग्निहोत्र
प्रात: 7:30 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (लाइव)
प्रात: 8:30 भजन सरिता
प्रात: 9:00 न्यूज बुलेटिन - भजन उत्सव
प्रात: 10:00 प्रवचन संग्रह
प्रात: 10:30 नव तरंग
प्रात: 11:00 प्रवचन माला
प्रात: 11:30 क्रियात्मक ध्यान
अपरान्ह 12:00 श्री राम कथा
अपरान्ह 12:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
अपरान्ह 1:00 विशेष
अपरान्ह 2:00 आर्य मंच
अपरान्ह 2:30 भजन सरिता
अपरान्ह 3:00 प्रवचन माला
अपरान्ह 3:30 नव तरंग
सायं 4:00 न्यूज बुलेटिन-भजन उत्सव
सायं 5:00 क्रियात्मक ध्यान
सायं 5:30 शरण प्रभु की आओ रे
सायं 6:00 सायंकालीन अग्निहोत्र
सायं 6:30 संध्या
सायं 6:45 आओ ध्यान करें
सायं 7:00 वेदवाणी
सायं 7:30 श्री राम कथा
सायं 8:00 भजन सरिता
सायं 8:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
रात्रि 9:00 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (पुन: प्रसारण)
रात्रि 10:00 शयन मन्त्र
रात्रि 10:05 न्यूज बुलेटिन - भजन उत्सव
रात्रि 11:00 नव तरंग
रात्रि 11:30 प्रवचन माला
रात्रि 12:00 स्वामी देवव्रत प्रवचन
रात्रि 12:30 शरण प्रभु की आओ रे
रात्रि 1:00 विशेष
रात्रि 2:00 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (पुन: प्रसारण)
रात्रि 3:00 आर्य मंच
रात्रि 3:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
प्रात: 4:00 न्यूज बुलेटिन-भजन उत्सव

नोट : आपातकालीन स्थिति में उपरोक्त दैनिक कार्यक्रमों में परिवर्तन किए जा सकते हैं। - ***व्यवस्थापक***

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां! तो

जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उनकी ईमेल आई.डी. लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट/टेलिग्राम द्वारा भेजा जाता रहेगा। - सम्पादक

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह